International Journal of Scientific Research in Science and Technology
Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X (www.ijsrst.com)
doi : https://doi.org/10.32628/IJSRST

रवीन्द्रनाथ टैगोर का शैक्षिक दर्शन

डॉ0 हर्षा पाटिल, प्रवक्ता शिक्षाशास्त्र विभाग, कलिंगा विश्वविद्यालय, नया रायपुर, छत्तीसगढ़

Article Info
Volume 8, Issue 4
Page Number : 159-161

Publication Issue
July-August-2021

Article History
Accepted : 02 July 2021
Published : 07 July 2021

रवीन्द्रनाथ टैगोर का जन्म देवेन्द्रनाथ टैगोर और शारदा देवी की सन्तान के रूप में 7 मई 1861 को कोलकाता के जोड़ासाँको ठाकुरबाड़ी में हुआ। उनकी विद्यालय की पढ़ाई प्रतिष्ठित सेंट जेवियर स्कूल में हुई। उन्होंने बैरिस्टर बनने की चाहत में 1878 में इंग्लैण्ड के ब्रिजटोन में पब्लिक स्कूल में नाम दर्ज कराया। उन्होंने लन्दन विश्वविद्यालय में कानून का अध्ययन किया लेकिन 1890 में बिना डिग्री प्राप्त किये ही स्वदेश वापस आ गये। सन् 1883 में मृणालिनी देवी के साथ उनका विवाह हुआ। उनकी प्रमुख कृतियों में–गीतांजलि, गीताली, गीतिमाल्य, कथा ओ कहानी, शिशु, शिशु भोलानाथ, कणिका, क्षणिका, खेया आदि प्रमुख हैं। टैगोर बचपन से ही बहुत प्रतिभाशाली थे। वे एक महान कवि, कहानीकार, गीतकार, संगीतकार, नाटककार, निबन्धकार तथा चित्रकार थे। उन्हें कला की कोई औपचारिक शिक्षा नहीं मिली थी। उसके बाद उन्होंने घर का दायित्व सम्भाल लिया। उन्हें प्रकृति से बहुत लगाव था। उनका मानना था कि विद्यार्थियों को प्राकृतिक वातावरण में ही पढ़ाई करनी चाहिये। वे गुरुदेव के नाम से प्रसिद्ध हो गये। वे अकेले ऐसे कवि हैं जिनकी लिखी. हुई दो रचनाएँ भारत और बांग्लादेश का राष्ट्रगान बनीं। उनकी अधिकतर रचनाएँ आम आदमी पर केन्द्रित हैं।

उनकी रचनाओं में सरलता, अनूठापन एवं दिव्यता है। उन्होंने भारतीय संस्कृति में नई जान फूंकने में महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया। उन्होंने अपनी पहली कविता 8 वर्ष की छोटी आयु में ही लिख दी थी जब उनकी रचनाओं का अंग्रेजी अनुवाद होने लगा तब सम्पूर्ण विश्व को उनकी प्रतिभा के बारे में पता चला। इस महान रचनाकार ने 2000 से भी अधिक गीत लिखे। 1919 में हुए जलियाँवाला बाग हत्याकांड की टैगोर ने निन्दा की

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

और इसके विरोध में उन्होंने अपना 'सर' का खिताब लौटा दिया। इस पर अंग्रेजी समाचार पत्रों ने टैगोर की बहुत निन्दा की। टैगोर की कविताओं को सबसे पहले विलियम रोथेनस्टाइन ने पढ़ा और ये रचनाएँ उन्हें इतनी अच्छी लगी कि उन्होंने पश्चिमी जगत के लेखकों, कवियों, चित्रकारों और चिन्तकों से टैगोर का परिचय कराया। काबुली वाला, मास्टर साहब और पोस्टमास्टर ये उनकी कुछ प्रमुख प्रसिद्ध कहानियाँ हैं। उनकी रचनाओं के पात्र रचना समाप्त होने तक असाधारण बन जाते हैं। उन्होंने अपने जीवन के उत्तरार्द्ध में चित्र बनाने प्रारम्भ किये और उनकी कलाकृति भी उत्कृष्ठ थीं।

1902 से 1907 के मध्य में उनकी पत्नी और 2 सन्तानों की मृत्यु का दर्द इसके बाद की रचनाओं में साफ झलकता है। टैगोर और महात्मा गाँधी के बीच में सदैव वैचारिक मतभेद रहे, इसके बाद भी वे दोनों एक–दूसरे का बहुत सम्मान करते थे। उन्होंने जीवन की प्रत्येक सच्चाई को सहजता के साथ स्वीकार किया और जीवन के अन्तिम समय तक सक्रिय रहे। 7 अगस्त 1941 को यह महान व्यक्तित्व इस संसार को छोड़कर चला गया।

टैगोर ने प्रचलित पाठ्यक्रम की भाँति तत्कालीन नीरस शिक्षा पद्धति की कृत्रिमता का विरोध करते हुए इस बात पर बल दिया कि शिक्षा की प्रक्रिया जीवन से पूर्व होनी चाहिये। उसे जीवन की वास्तविकताओं पर आधारित होना चाहिये। इस सम्बन्ध में विचार था कि बालक का विकास उसकी रुचियों तथा आवेगों के अनुसार होना चाहिये। इसके लिये उसे प्रत्यक्ष स्रोतों से स्वतन्त्र प्रयासों द्वारा प्रत्यक्ष ज्ञान को अर्जित करने के अवसर मिलने परम आवश्यक हैं। अतः टैगोर ने बालक की शिक्षा के लिये निम्नलिखित गतिविधियों को उपयुक्त माना तथा उनका प्रयोग अपनी प्रसिद्ध शैक्षिक संस्था शान्ति निकेतन में किया।

टैगोर का विश्वास था कि कक्षा में पढ़ायी जाने वाली शिक्षा का प्रभाव न तो बालक के मस्तिष्क पर पड़ता है और न बालक के शरीर पर। ऐसी मतिहीन शिक्षा व्यर्थ है। वे कहते थे कि भ्रमण के समय बालकों की मानसिक शश्तियाँ सतर्क रहती हैं। अतः वे अनेक विषयों को प्रत्यक्ष रूप से देखकर उनके विषय में ज्ञान को सरलता से प्राप्त कर लेते हैं। इस दृष्टि से टैगोर के ही शब्दों में–"भ्रमण के समय पढ़ना शिक्षण की सर्वोतम विधि है।"

टैगोर का विश्वास था कि वास्तविक शिक्षा केवल पुस्तकों के रट लेने तक ही सीमित नहीं होती अपितु वह जीवन तथा समाज के अध्ययन पर आधारित होती है। वे कहते थे कि बालकों को प्रश्नों तथा उत्तरों के द्वारा शिक्षा प्रदान करनी चाहिये। यही नहीं उनके समक्ष अनेक प्रकार की समस्याओं को भी रखना चाहिये, जिससे वे इन समस्याओं का हल वाद–विवाद द्वारा आसानी से निकाल सकें।

टैगोर ने क्रिया सिद्धान्त को विशेष महत्व प्रदान किया। उनका विश्वास था कि क्रिया शरीर एवं मस्तिष्क दोनों को शक्ति देती है। इसलिये उन्होंने शान्ति निकेतन में किसी न किसी दस्तकारी को सीखना अनिवार्य कर दिया। टैगोर क्रिया के सिद्धान्त पर इतना विश्वास करते थे कि यदि कोई बालक शिक्षा प्राप्त करते समय भी उनसे पूछे–"क्या मैं दौड़ जाऊँ" तो वे कहते थे–अवश्य। उनका विश्वास था कि पेड़ पर चढ़ने, फल तोड़ने तथा कूदने–फाँदने से थकावट दूर हो जाती है जिससे बालक ज्ञान प्राप्त करने के लिये अधिक अच्छी दशा में आ जाता है तथा बालक के अनुभवों का महत्व बढ़ जाता है।

टैगोर मातृभाषा को शिक्षा का सरलतम माध्यम समझते थे। उन्होंने कहा कि विदेशी भाषा के माध्यम से शिक्षा देना अनुचित है। इसके अतिरिक्त टैगोर विश्वबन्धुत्व की भावना के भी समर्थक थे। अतः उन्होंने कहा कि पाठ्यक्रम में सभी संस्कृतियों को स्थान दिया जाना चाहिये।

टैगोर का कहना था कि बालकों को शिक्षण खेल द्वारा दिया जाना चाहिये। खेल द्वारा शिक्षण उत्तम होता है क्योंकि खेल में बालक रुचि लेते हैं। आनन्द का अनुभव करते हैं तथा स्वतन्त्रता का भी अनुभव करते हैं। इससे शिक्षण मनोरंजक तथा सरल हो जाता है।

टैगोर का विश्वास था कि शिक्षण इस प्रकार किया जाना चाहिये कि जिससे बालक स्वयं के अनुभवों से कुछ सीखें इसीलिये आवश्यक है कि शिक्षा को बालक के जीवन पर केन्द्रित किया जाय। जब शिक्षा जीवन से सम्बन्धित हो जाती है तो उसकी कृत्रिमता समाप्त हो जाती है।

सन्दर्भ :

1. राय पारसनाथ (2005) : अनुसंधान परिचय, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा।
2. टैगोर रवीन्द्रनाथ (1913) गीतांजलि लंदन।
3. लल, रमन बिहारी (2007) : शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धान्त, रस्तोगी पब्लिकेशन्स, मेरठ।
4. टैगोर, रवीन्द्रनाथ (1913) : व्यक्तित्व, लंदन।